

19. सरदार वल्लभ भाई पटेल

- डॉ० राममूर्ति वासुदेव प्रशांत



सरदार पटेल का नाम संसार के महान् राष्ट्र-निर्माताओं में हमेशा श्रद्धा के साथ लिया जाता है। एक साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने अपनी निर्भीकता, देशभक्ति तथा संगठन शक्ति के बल पर अपने जीवन में वह कार्य कर दिखाया जो बड़े-से-बड़े राजनीतिज्ञों के लिए भी संभव नहीं था। वे महात्मा गांधी की तरह न तो सन्त थे और न ही नेहरू की तरह एक आदर्शवादी। वे एक सुलझे हुए कूटनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक और इस सब से ऊपर एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उन्होंने देश सेवा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के खेड़ा जिले के करमसद नामक गांव में एक कृषक परिवार में हुआ। उनके पिता झवेरभाई बड़े साहसी और वीर पुरुष थे। उन्होंने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम प्रयास में बड़े उत्साह से भाग लिया था। सरदार पटेल की माता लाड़बाई भी उनके पिता के समान ही संयमी, धर्मशील और देशभक्त थीं। माता-पिता के इन गुणों का प्रभाव वल्लभभाई के चरित्र पर भी पड़ा। वे सरल, संयमी, सादा और साहसी व्यक्ति थे। सच्चाई और दृढ़ता उनके व्यक्तित्व के प्रमुख गुण थे।

वल्लभभाई की आरंभिक शिक्षा करमसद, बड़ौदा, नड़ियाद आदि स्थानों में हुई। वकालत की परीक्षा पास करके वे गोधरा में प्रैक्टिस करने लग पड़े। अपनी कार्यपटुता और बुद्धि-कौशल के कारण वे थोड़े ही समय में अपने जिले में प्रख्यात हो गए। उनका विवाह 18 वर्ष की आयु में ही झवेरबा के साथ हो गया। अप्रैल 1904 में उनके घर मणिबेन का तथा नवम्बर 1905 में डाझाभाई का जन्म हुआ। किन्तु उनकी पत्नी का स्वास्थ्य निरन्तर खराब रहने लगा और 11 जनवरी, 1909 को स्वर्गवास हो गया। उस समय वल्लभ भाई की आयु केवल 34 वर्ष की थी। इस के बाद 1910 में वल्लभभाई बैरिस्टरी करने के लिए विलायत चले गए। वहाँ बैरिस्टरी की परीक्षा में उन्होंने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। फिर विलायत से लौटने पर 1913 में उन्होंने अहमदाबाद में वकालत करनी शुरू कर दी। वहां उनकी अच्छी-खासी धाक जम गई। इस समय कीर्ति एवं ऐश्वर्य दोनों ही उनके आगे हाथ बाँधे खड़े थे। किन्तु उन्होंने वकालत का कार्य 1919 के अन्त तक ही किया।

सरदार पटेल महात्मा गांधी के संपर्क में आने से बहुत पहले ही सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे। पहले वे 1917 में अहमदाबाद नगरपालिका के सदस्य चुने गए। इन्हीं दिनों वे 'गुजरात सभा' के सचिव भी चुने गये। 1918 में उन्होंने 'खेड़ा-सत्याग्रह' तथा अहमदाबाद के मजदूर-मिल मालिकों के झगड़े में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। तदुपरान्त रौलट-बिल विरोधी आन्दोलन का सूत्रपात्र होने पर उन्होंने सत्याग्रह की प्रतिज्ञा ले ली। 11 जुलाई, 1920 को उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा को मूर्तरूप

देने के उद्देश्य से गुजरात में 'गुजरात-विद्यापीठ' की स्थापना की। इसके बाद असहयोग आन्दोलन की रणभेरी बजते ही उन्होंने हजारों की आमदनी वाली अपनी वकालत का परित्याग कर दिया। तत्पश्चात् 1922 में बोरसद के 'ताज्जीरी-कर-विरोधी सत्याग्रह' और 1923 में नागपुर के इतिहास-प्रसिद्ध 'झंडा-सत्याग्रह' के अवसर पर उन्होंने चिरस्मरणीय सेवा कार्य किया। अगले ही वर्ष 'बारदोली-सत्याग्रह' के अपूर्व जनसंग्राम की अमरगाथा द्वारा उन्होंने राष्ट्रीय इतिहास के एक पृथक् अध्याय की सृष्टि की। इसी कारण उन्हें 'सरदार' की उपाधि से विभूषित किया गया। फिर नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह आदि में वे अनेक बार जेल गए। मार्च 1931 में कांग्रेस का 45वां वार्षिक अधिवेशन उन्हीं की अध्यक्षता में कराची में सम्पन्न हुआ।

जब कांग्रेस ने कौंसल-प्रवेश का निर्णय लिया, तो सरदार पटेल ने 1935 से 1940 तक 'कांग्रेस पार्लियामेंट बोर्ड' के अध्यक्ष के रूप में धारा-सभाओं के चुनाव में भाग लिया। कांग्रेसी मन्त्रिमंडलों की स्थापना तथा नवनिर्मित राष्ट्रीय सरकारों के निरीक्षण में उनकी भागीदारी स्मरणीय है। तत्पश्चात्, व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौर में 1940 में वे गिरफ्तार हुए, किन्तु स्वास्थ्य की खराबी के कारण 1941 में छोड़ दिए गए। इसके बाद गांधी जी द्वारा 'भारत छोड़ो' का युगान्तरकारी नारा बुलन्द किए जाने पर 9 अगस्त, 1942 को पुनः कांग्रेस कार्यसमिति के अन्य सदस्यों सहित जेल में डाल दिए गए। 15 जून, 1945 को तीन वर्ष की नज़रबंदी के बाद उन्हें कारागार से मुक्ति मिली। सरदार पटेल ने 1945 की प्रसिद्ध शिमला कांग्रेस से लेकर 1946 में वे अस्थायी अन्तरिम सरकार में सम्मिलित हुए। सन् 1947 में वे स्वतंत्र भारत के प्रथम उपप्रधानमन्त्री बने। उन्हें गृह, सूचना तथा रियासती विभागों का कार्यभार सौंपा गया। गृहमन्त्री के रूप में उन्होंने अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गई लगभग 600 छोटी-बड़ी रियासतों को भारतीय संघ में विलय करने का अभूतपूर्व कार्य किया।

अपने गृहमन्त्री के कार्यकाल में सरदार पटेल अस्वस्थ रहने लग पड़े थे। 15 दिसम्बर, 1950 को 76 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हो गया। उन के निधन से स्वतन्त्र भारत एक कुशल प्रशासक, दूरदर्शी राजनेता एवं समर्पित देशभक्त से वंचित हो गया।

निश्चय ही आधुनिक भारत के राजनेता सरदार पटेल अपने ढंग के अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे स्पष्टवादी, सत्यनिष्ठ और निर्भीक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे सदैव सीधी-सच्ची बात करने में विश्वास रखते थे। शत्रु के साथ कभी भी रियायत न बरतने, अनुशासन भंग करने वालों को क्षमा न करने और 'शटे शाठ्यं समाचरेत्' वाली नीति का अनुसरण करना उन का स्वभाव था। वे निस्सन्देह मनु, कौटिल्य, शिवा जी एवं लोकमान्य तिलक जैसे कर्मठ राष्ट्र नायकों की परम्परा के आधुनिक प्रतिनिधि माने जाते हैं। अपने इन्हीं गुणों के कारण उन्हें लौहपुरुष कहा जाता है।

लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की राष्ट्रभक्ति, त्याग, उत्सर्ग, दृढ़ निश्चय आदि गुण आधुनिक युवा पीढ़ी को सदैव के लिए प्रेरणा देते रहेंगे। आने वाले इतिहासकार उन की संगठनात्मक क्षमता और अतिमानवीय योग्यता पर आश्चर्य प्रकट करते रहेंगे। 600 देशी रियासतों को भारत के संघ में मिलाना और महाराजाओं एवं नवाबों के निरंकुश शासन को समाप्त करना उनकी अपूर्व और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी। समग्र राष्ट्र इसके लिए हमेशा उन का कृतज्ञ और ऋणी रहेगा।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के अति लघु उत्तर दीजिए :

- (क) सरदार पटेल की माता लाड़बाई कैसी महिला थीं ?
- (ख) सरदार पटेल किस लिए विलायत गए ?
- (ग) सरदार पटेल ने राष्ट्रीय शिक्षा के लिए किस संस्था की स्थापना की ?
- (घ) सरदार पटेल ने किस स्थान पर कांग्रेस के 45वें अधिवेशन की अध्यक्षता की ?
- (ङ) सरदार पटेल का स्वर्गवास कब हुआ ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

- (क) सरदार पटेल के पिता बड़े साहसी और वीर पुरुष थे।
- (ख) पटेल स्वभाव से संयमी, सादा और व्यक्ति थे।
- (ग) उन्होंने बैरिस्टरी की परीक्षा में स्थान प्राप्त किया।
- (घ) 'बारदोली-सत्याग्रह' के बाद पटेल को की उपाधि से विभूषित किया गया।
- (ङ) राष्ट्र सरदार पटेल का हमेशा रहेगा।

3. सरदार पटेल का जीवन-परिचय संक्षेप में दीजिए।

